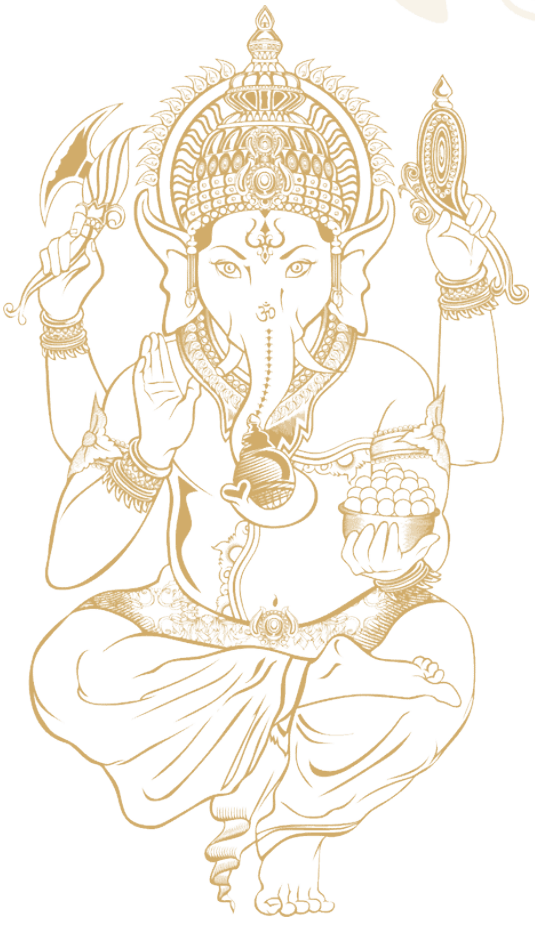

Mr.Shubham Sharma

Ms.Gargi Sharma

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120264303

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
18/09/1995	जन्म तिथि	25-26/03/2001
सोमवार	दिन	रवि-सोमवार
घंटे 20:04:00	जन्म समय	02:00:00 घंटे
घटी 34:51:52	जन्म समय(घटी)	49:10:41 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Bulandshahr
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	28:30:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:49:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:18:44 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:07:15	सूर्योदय	06:17:21
18:24:26	सूर्यास्त	18:32:35
23:47:58	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:10

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
गुरु 15वर्ष 8मा 16दि	07:48:23	मेष	लग्न	धनु	20:28:21	बुध 12वर्ष 0मा 3दि
शनि	01:24:29	कन्या	सूर्य	मीन	11:22:50	शुक्र
05/06/2011	20:14:21	मिथु	चंद्र	मीन	20:34:54	28/03/2020
05/06/2030	13:45:24	तुला	मंगल	वृश्चि	24:27:37	28/03/2040
शनि 08/06/2014	25:39:41	कन्या	बुध	कुंभ	17:45:55	शुक्र 29/07/2023
बुध 15/02/2017	14:54:17	वृश्चि	गुरु	वृष	12:42:06	सूर्य 28/07/2024
केतु 27/03/2018	09:10:53	कन्या	शुक्र व	मीन	18:19:51	चन्द्र 29/03/2026
शुक्र 27/05/2021	27:14:00	कुंभ व	शनि	वृष	03:18:12	मंगल 29/05/2027
सूर्य 09/05/2022	03:11:12	तुला व	राहु व	मिथु	17:34:05	राहु 29/05/2030
चन्द्र 08/12/2023	03:11:12	मेष व	केतु व	धनु	17:34:05	गुरु 27/01/2033
मंगल 16/01/2025	02:51:33	मक व	हर्ष	मक	29:20:52	शनि 28/03/2036
राहु 23/11/2027	29:02:57	धनु व	नेप	मक	14:20:13	बुध 27/01/2039
गुरु 05/06/2030	04:28:55	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	21:23:34	केतु 28/03/2040

लग्न-चलित

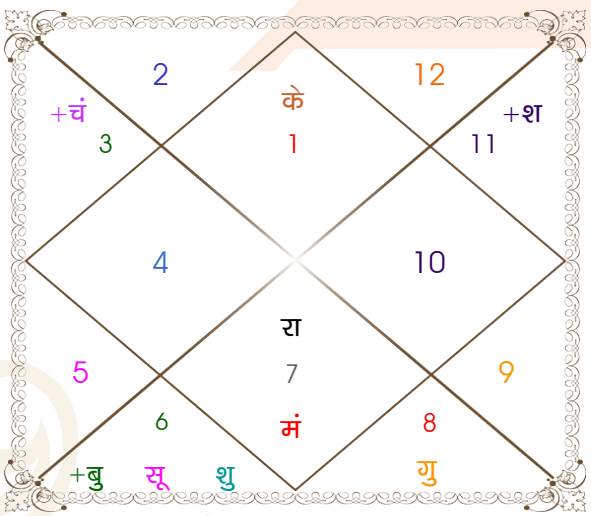

लग्न-चलित

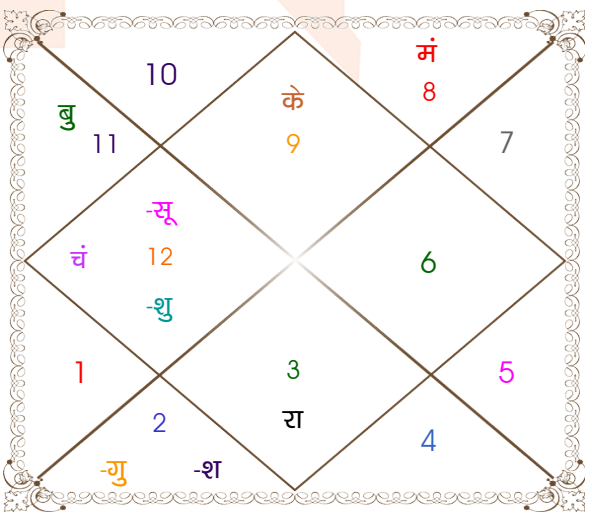

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मार्जार	गज	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	बुध	गुरु	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मिथुन	मीन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.00		

डतणैनड्डींउॅींतउं का वर्ग मार्जार है तथा डेण्ळंतहपॅींतउं का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गो में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतणैनड्डींउॅींतउं और डेण्ळंतहपॅींतउं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतणैनड्डींउॅींतउं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु डतणैनड्डींउॅींतउं कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेण्ळंतहपॅींतउं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डेण्ळंतहपॅींतउं कि कुण्डली में द्वादश भाव में वृश्चिक राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल डेण्ळंतहपॅ ीतउं कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु डेण्ळंतहपॅ ीतउं कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डेण्ळंतहपॅ ीतउं कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डतॅैनईींउॅ ीतउं कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतॅैनईींउॅ ीतउं तथा डेण्ळंतहपॅ ीतउं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।